

# ROMANS:

a letter from a life "ruined" by Jesus

---

---

---

---

---

---

---

---



We are **RUINED** when  
our lives are **DISRUPTED**  
our passions are **REDIRECTED**  
our egos are **DEFEATED**  
our minds are **DISCIPLED**  
our strengths & talents are **DEVOTED**

---

---

---

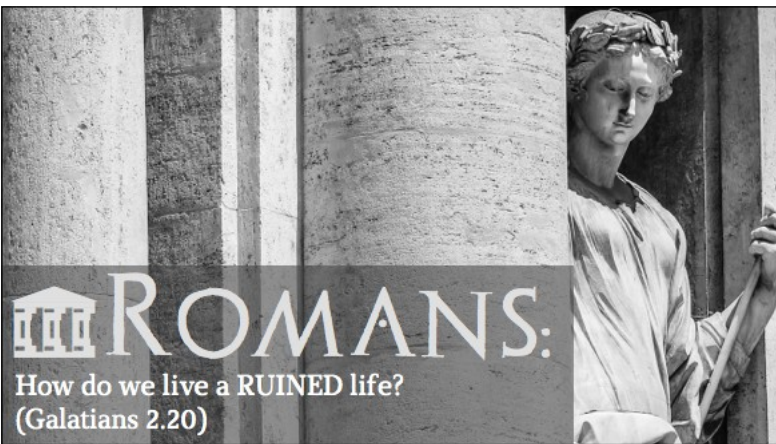
---

---

---

---

---



# ROMANS:

How do we live a **RUINED** life?  
(Galatians 2.20)

---

---

---

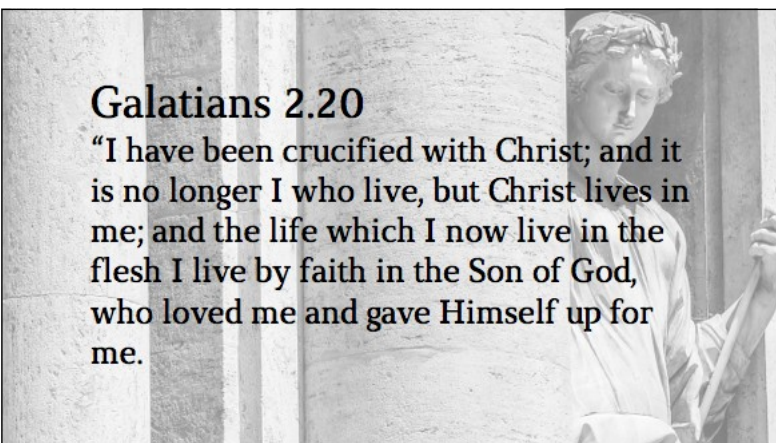
---

---

---

---

---



## Galatians 2.20

"I have been crucified with Christ; and it is no longer I who live, but Christ lives in me; and the life which I now live in the flesh I live by faith in the Son of God, who loved me and gave Himself up for me.

---

---

---

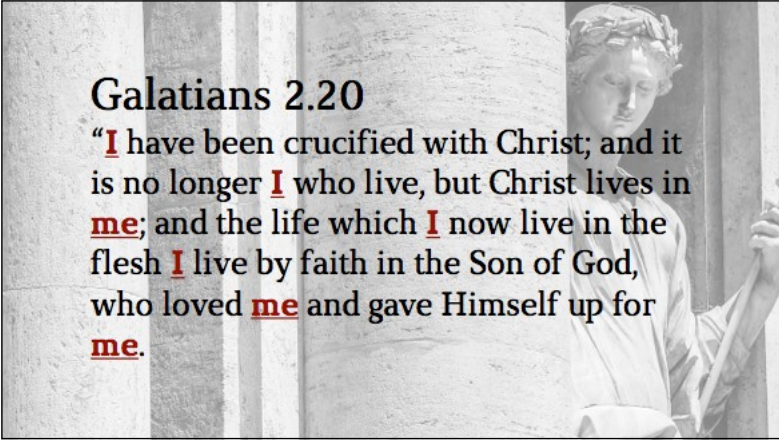
---

---

---

---

---



## Galatians 2.20

**I** have been crucified with Christ; and it is no longer **I** who live, but Christ lives in **me**; and the life which **I** now live in the flesh **I** live by faith in the Son of God, who loved **me** and gave Himself up for **me**.

---

---

---

---

---

---

---

---



## Galatians 2.20

**I** have been crucified with Christ; and it is no longer **I** who **live**, but Christ **lives** in **me**; and the **life** which **I** now **live** in the flesh **I live** by faith in the Son of God, who loved **me** and gave Himself up for **me**.

---

---

---

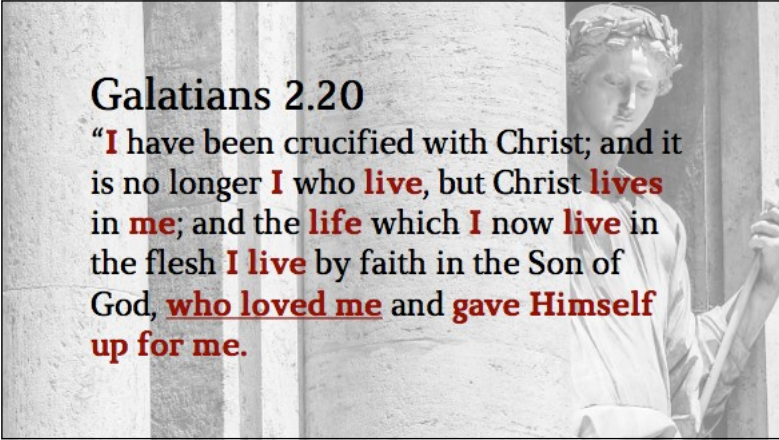
---

---

---

---

---



## Galatians 2.20

**I** have been crucified with Christ; and it is no longer **I** who **live**, but Christ **lives** in **me**; and the **life** which **I** now **live** in the flesh **I live** by faith in the Son of God, **who loved me** and **gave Himself up for me**.

---

---

---

---

---

---

---

---



in relation to evil the Cross is a

# CONQUEST

Hebrews 2.14, 15; 1 John 3.8

---

---

---

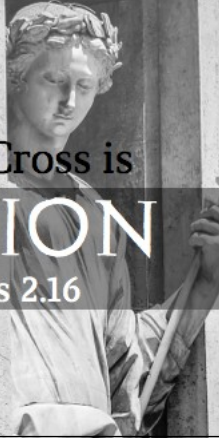
---

---

---

---

---



in relation to the world the Cross is

# RECONCILIATION

2 Corinthians 5.19; Ephesians 2.16

---

---

---


---

---

---

---

---



in relation to God the Cross is an

# OFFERING

Ephesians 5.2; 2 Corinthians 5.21

---

---

---


---

---

---

---

---



in relation to the Law the Cross is

# SATISFACTION

Ephesians 5.2; 2 Corinthians 5.21

---

---

---


---

---

---

---

---



in relation to our sin the Cross is a

# SUBSTITUTION

Romans 3.21-28

---

---

---

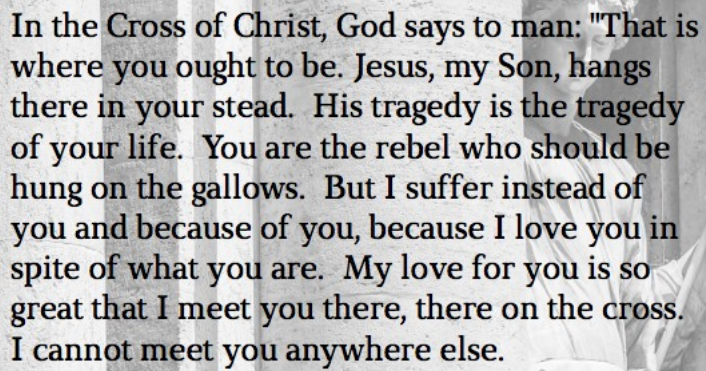
---

---

---

---

---



In the Cross of Christ, God says to man: "That is where you ought to be. Jesus, my Son, hangs there in your stead. His tragedy is the tragedy of your life. You are the rebel who should be hung on the gallows. But I suffer instead of you and because of you, because I love you in spite of what you are. My love for you is so great that I meet you there, there on the cross. I cannot meet you anywhere else.

---

---

---

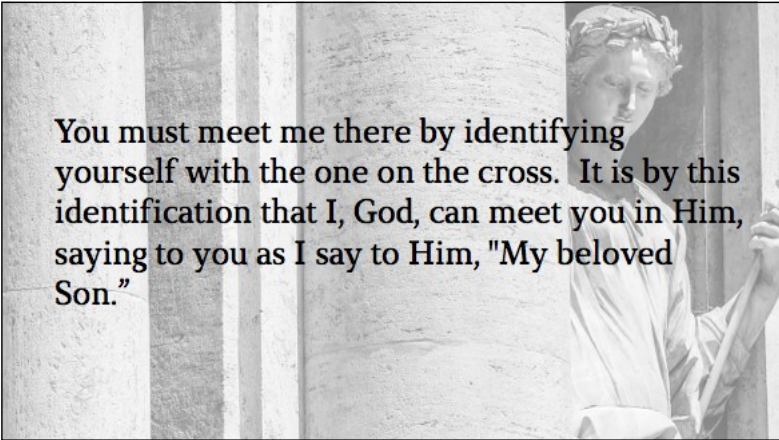
---

---

---

---

---



You must meet me there by identifying yourself with the one on the cross. It is by this identification that I, God, can meet you in Him, saying to you as I say to Him, "My beloved Son."

---

---

---

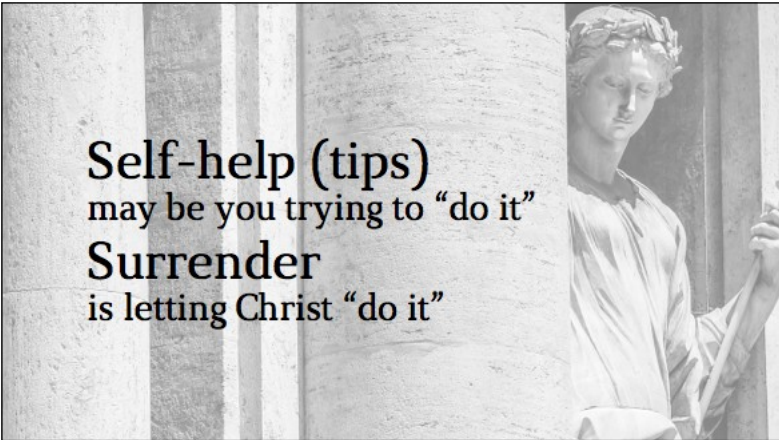
---

---

---

---

---



**Self-help (tips)**  
may be you trying to "do it"  
**Surrender**  
is letting Christ "do it"

---

---

---

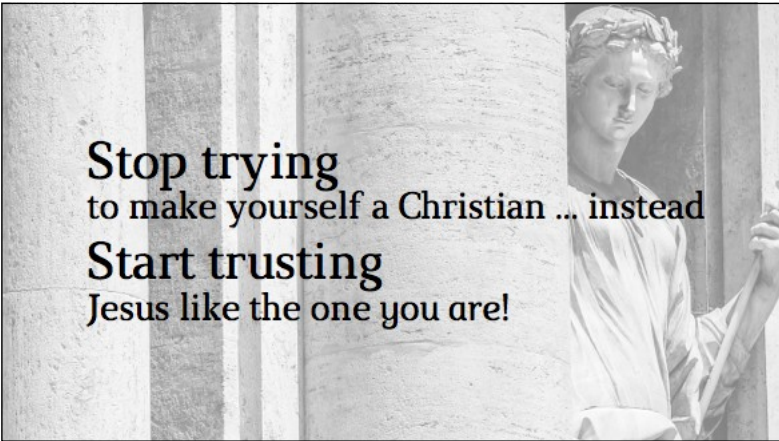
---

---

---

---

---



**Stop trying**  
to make yourself a Christian ... instead  
**Start trusting**  
Jesus like the one you are!

---

---

---

---

---

---

---

---